शब्द–ब्रह्म
E- ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जुलाई 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

'मैला आँचल' में ग्रामीण जीवन

रतनलाल परमार (शोधार्थी)
डॉ.अब्दुल शहज़ाद कुरैशी (निर्देशक)
शासकीय कला एवं विज्ञान महाविद्यालय
मूँदी, जिला खण्डवा (म.प्र.), भारत

शोध संक्षेप

हिंदी साहित्य में आंचलिक उपन्यासों का लेखन फणीश्वरनाथ रेणु ने प्रारम्भ किया। इन आंचलिक उपन्यासों में सच्चे भारतीय ग्राम्य जीवन का दर्शन होता है। उनका उपन्यास 'मैला आँचल' अनेक दृष्टियों से हिंदी साहित्य की निधि है। इसमें भारत माता के जिस धूल भरे मैले आँचल का चित्रण किया गया है, वह आज भी जस-का-तस मौजूद है । प्रस्तुत शोध पत्र में मैला आँचल में अभिव्यक्त ग्रामीण जीवन पर विचार किया गया है।

मैला आँचल में ग्राम्य जीवन

मैला आँचल हिन्दी का श्रेष्ठ और सशक्त आंचलिक उपन्यास है। नेपाल की सीमा से सटे उत्तर-पूर्वी बिहार के एक पिछड़े ग्रामीण अंचल को पृष्ठभूमि बनाकर रेणु ने इसमें वहाँ के जीवन का, जिससे वह स्वयं भी घनिष्ट रूप से जुड़े हुए थे, अत्यंत जीवन्त और मुखर चित्रण किया है। "पूर्णिया जिले में ऐसे बहुत से गाँव और कस्बे हैं, जो आज भी अपने नामों पर नीलहे साहबों का बोझ ढो रहे हैं। वीरान जंगलों और मैदानों में नील कोठी के खण्डहर राही बटोहियों को आज भी नील युग की भूली हुई कहानियाँ याद दिला देते हैं।" ऐसा ही एक गाँव है मेरीगंज। रौतहट स्टेशन से सात कोस पूरब बूढ़ी कोसी को पार करके जाना होता है। बूढ़ी कोसी के किनारे-किनारे बहुत दूर तक ताड़ और खजूर के पेड़ों से भरा हुआ जंगल है। इस अंचल के लोग इसे 'नवाबी तड़बन्ना' कहते हैं।

मेरीगंज एक बड़ा गाँव है , बारहो बरन के लोग रहते हैं। गाँव के पूरब में एक धारा है जिसे कमला नदी कहते हैं। बरसात में कमला नदी भर जाती, बाकी मौसम में बड़े-बड़े गड्ढों में पानी जमा रहता, मछलियों और कमल के फूलों से भरे हुए गड्ढे, पौष पूर्णिमा के दिन इन्हीं गड्ढों में कोसी स्नान के लिए सुबह से शाम तक भीड़ लगी रहती है।

"गाँव अलग-अलग टोली में बंटा हुआ है। राजपूत टोली कायस्थ टोली , यादव टोली, ब्राह्मण टोली, तंत्रीमा टोली, धूसार टोली। गाँव में सरकारी स्कूल, दवाखाना है। सारे मेरीगंज में दस आदमी पढे-लिखे हैं। गाँव की मुख्य पैदावार धान , पाट और खेसारी रब्बी की फसल भी कभी-कभी अच्छी हो जाती, गाँव में अलग-अलग टोली के प्रमुख भी अलग-अलग हैं। पढे-लिखे ज्ञानी बालदेव जी जो गांधी जी की विचार धारा वाले थे। गाँव में सब लोग उनकी इज्जत करते थे। बालदेव जी सबसे जय हिन्द बोलते , गाँव के पास ही एक मठ है। वहां पर साधु व उनके चेले रहते थे। मठ के नाम पर करीब पांच सौ एकड़ जमीन , जिसमें आम के बगीचे, व धान के बड़े-बड़े खेत थे। मुर्रा भैंस का टोला भी महंत जी ने पाल रखा था। मठ पर लक्ष्मी कोठारी दासी बनकर रहती थी।

चादर-टीका उसे महंत जी द्वारा दिया गया था। गाँव में दवाखाना खुलने की खुशी में महंत जी बड़ा भण्डारा करवाते हैं। जिसमें खीर-पूड़ी , ग्रामवासियों को खिलाते हैं।

गाँव के सबसे बड़े जागीरदार तहसीलदार विश्वनाथप्रसाद जी हजार एकड़ जमीन उनके पास, तहसीलदारी उनको पूर्वजों से मिली थी। आस-पास के गाँवों में उनकी जागीरी। सब लोग उनकी बड़ी इज्जत करते थे। तहसीलदार साब की पुत्री कमला, मिरगी रोग से पीड़ित थी। उसका इलाज डॉ.प्रशान्त बनर्जी करते थे। जो मेरीगंज में मलेरिया रिसर्च के लिए आये थे। गाँव में बरसात के दिनों में गड्ढों में पानी जमा होने से मच्छर ज्यादा पैदा हो जाते , मच्छरों के काटने से मलेरिया बुखार आ जाता था। डॉ..प्रशान्त का आना-जाना तहसीलदार साहब के घर लगा रहता, कमली के ईलाज के लिए वो वहां पर जाते , कमली डॉक्टर के प्यार में पड़ जाती है और बहाना बनाकर बीमार होने का ढोंग करती थी। डॉक्टर. कमली के घर नहीं जाते तो कमली स्वयं डॉक्टर. के दवाखाने में चली जाती व बेतार की खबर सुनकर प्रसन्न होती इस प्रकार इनका प्यार परवान चढ़ जाता, कमली गर्भवती हो जाती। डॉक्टर रिसर्च के चक्कर में पटना जाता है। तहसीलदार साहब को कमली की चिंता सताने लग जाती, तहसीलदार साहब पसीने से तर-बतर हो रहें हैं। प्यारू का मुँह सूख गया है। लेकिन आश्चर्य! कमली पर इसकी कोई प्रतिक्रिया नहीं होती।... 'डॉक्टर को कुछ नहीं हो सकता। कोई बात नहीं है,' कमली को दृढ़ विश्वास है। कमली एक पुत्र को जन्म देती है। कमला के कलंक ने उसकी माता का आंचल मैला किया। कुछ दिन बाद डॉक्टर. प्रशान्त भी आ जाता है और कमली को अपने साथ चलने को कहता , डॉक्टर. द्वारा कमला को अपनाने से उसके पिता तहसीलदार विश्वनाथप्रसाद मलिक का हृदय परिवर्तन हो जाता और अपनी जमीन में से कुछ जमीन गरीबों को बांट देते है। मैला आँचल का कथानायक एक युवा डॉक्टर है जो अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद एक पिछड़े गाँव को अपने कार्य-क्षेत्र के रूप में चुनता है , तथा इसी क्रम में ग्रामीण जीवन के पिछड़ेपन , दुःख-दैन्य, अभाव, अज्ञान, अन्धविश्वास के साथ-साथ तरह-तरह के सामाजिक शोषण-चक्रों में फँसी हुई जनता की पीड़ाओं और संघर्षों से भी उसका साक्षात्कार होता है।

निष्कर्ष

कथा का अन्त इस आशामय संकेत के साथ होता है कि युगों से सोई हुई ग्राम-चेतना तेजी से जाग रही है। कथाशिल्पी फणीश्वरनाथ रेणु की इस युगान्तरकारी औपन्यासिक कृति में कथाशिल्प के साथ-साथ भाषा और शैली का भी विलक्षण सामंजस्य है जो जितना सहज-स्वाभाविक है, उतना ही प्रभावकारी और मोहक भी। ग्रामीण अंचल की ध्वनियों और धूसर लैंडस्केप्स से सम्पन्न यह उपन्यास हिन्दी कथा-जगत में पिछले कई दशकों से एक क्लासिक रचना के रूप में स्थापित हैं।

संदर्भ

1 मैला आँचल, 'फणीश्वरनाथ रेणु', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।